Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 06, (नवंबर, 2024)
पृष्ठ संख्या 16–17

उत्तम चारा फसलः जई

आशुतोष कमल[1], वीकेश कुमार[2] एवं आनन्द कुमार[3],
[1]शोध छात्र, पशुपालन एवं दुग्ध विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश।
[2,3]पी0एच0डी0 शोध छात्र, पशुपालन एवं दुग्ध विभाग,
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – ashutoshkamal.bhu@gmail.com

जई ऐसी फसल है जिसे सिंचित प्रदेशों में वर्षा ऋतु के बाद बोया जाता है मुख्यतः इसे कृषक चारे और अनाज दोनो के लिए उगाते है। हरे चारे हेतु इस फसल को कई अन्य फसल जैसे बरसीम, सरसों, तोरिया और मटर के साथ मिला कर बोने पर यह अधिक उपज पायी जाती है। यह 90–110 दिन में चारे के लिए तैयार हो जाती है। इस लिए इसे हरे चारे हेतु उत्तम फसल माना जाता है। जई जिसका उपयोग दुधारू पशुओं और घोड़े–खच्चर को खिलाने के लिए हरे चारे तथा अनाज के लिए किया जाता है। यह एक तीव्र गति से बढ़ने वाला चारा है।

भूमि एंव भूमि की तैयारी–

दोमट भूमि में जई की फसल का उत्पादन अच्छा होता है। मगर इसे सभी प्रकार की भूमियों में पैदा किया जा सकता है। रेतीली तथा बलुई दोमट भूमि में भी जई की अच्छी पैदावार देती है। वर्षा समाप्त होने पर खेत की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। पहली जुताई हल्की जो कि मिट्टी पलट हल से करते है तथा अन्य दो से तीन जुताई देशी हल से करने पर खेत की भूमि को भुरभूरा और समतल करते है जो जई की उतम उपज लेने के लिए भूमि का भुरभूरा और समतल होना अति आवश्यक है।

जातियाँः–

1. **अगेती जातियाँ–** एन0 पी0 3, वेस्टन 2, वेस्टन 11, बंकर 10
2. **पछेती जातियाँ–** अल्जीरियाई, ओएस–6, बुंदेल जई 851, ब्रांकर–10, एन0 पी0 1, एन0 पी0 3, केंट (केंट चारे और अनाज दोनो के लिए सबसे उत्तम जाति मानी जाती है)

बीज उपचार–

बीजों को विभिन्न फफूंदीजन्य एवं रोगजनक रोगो से बचाने के लिए बीजों को कैप्टान

एवं थीरम 3 ग्राम/किलोग्राम की दर से उचारित करना चाहिए।

बुवाई की विधि व समय–

हरे चारे के लिए बीज खेत में छिटकवा विधि से बोया जाता है। बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर होता है। लेकिन अनाज के लिए बीज देशी हल के पीछे लाइन में बोया जाता है। लाइन से लाइन की दूरी और पौधे से पौधे की दूरी 10–10 सेन्टीमीटर रखते है। इस प्रकार से बुवाई करने के लिए 70 से 75 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बीज की मात्रा की आवश्यकता होती है। चारे के लिए बीज की बुवाई 1 से 15 सितम्बर तक कर देनी चाहिए, लेकिन अनाज के लिए बुवाई अक्टूबर के अन्त तक करते है।

जई के साथ मिश्रित खेती–

जई के चारे की उत्पादकता, स्वादिष्ट गुणवत्ता व पौष्टिकता बढ़ाने के लिए सरसों, मटर, सैंजी अथवा मेथी आदि की मिश्रित खेती पद्यति में उगाया जाता है। सरसों को जई के साथ उगाने स अच्छा चारा मिलता है और कुछ फसल उत्पादन की मात्रा भी बढ़ जाती है।

खाद–

खेत तैयार करते समय 130–150 क्विटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर और कम्पोस्ट की खाद खेत में डालना बड़ा उपयोगी होता है। प्रति एकड़ 30 किलोग्राम नाइट्रोजन यूरिया 66 किलोग्राम और 8 किलोग्राम फॉस्फोरस डालें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय डालें। नाइट्रोजन की बची हुई मात्रा बुवाई के 30–40 दिन बाद डालें।

सिंचाई–

जई की खेती मुख्य रूप से वर्षा आधारित फसल के रूप में की जाती है। लेकिन अगर इसे सिंचित फसल के रूप में उगाया जाता है तो बुवाई से 25 दिन बाद पहली सिंचाई करनी चाहिए फिर हर महीनें सिंचाई करनी चाहिए। अगर फसल अनाज के लिए बोई गयी है तो कटाई से 25 दिन पहले सिंचाई की जरूरत नही है।

कटाई एंव पैदावार–

अगेती बोई गई जई की पहली कटाई बुवाई के लगभग 60 दिन बाद करते है फसल की दूसरी कटाई प्राप्त करने के लिए फसल को जमीन से 5 सेंटीमीटर ऊंचाई से काटते है तथा देसरी कटाई उसके 45 दिन बाद करनी चाहिए। पछेती जई में दूसरी कटाई प्राप्त करना सम्भव नही होता है। पछेती जई की फसल में बुवाई के 90 दिन बाद एक कटाई की जाती है। हरे चारे की औसत उपज 400–500 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।